दिनांक - 03-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा॰ फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 11th ग्यारहवीं कक्षा के लिए

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (अतिरिक्त विषय)

एकाई :- प्रथम

अध्याय 1 समय की शुरुआत से

इस अध्याय में इस बात की चर्चा की गई है कि मानव कब और किस रूप से सर्वप्रथम अस्तित्व में आया। ऐसा समझा जाता है कि करीब 56 लाख वर्ष पहले पृथ्वी पर ऐसे प्राणियों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्हें हम मानव कह सकते हैं। इसके बाद आदि मानव के कई रूप बदले और

Scanned with CamScanner

कपांतर में लुप्त हो गए। आज हम जिस रूप में मानव को देखते है जिन्हे हमने आगे आधुनिक मानव कहा) वैसे लोग 160,000 साल पहले पैदा हुए। लगभग 8000 ई० पू० तक मानव इतिहास के इस लंबे अरसे के दौरान लोग, दूसरे द्वारा मारे गए या अपनी मौत खुद मरे प्राणियों के शरीर में से मांस निकालकर, जानवरों का शिकार करके अथवा पेड़-पौधों से कंदमूल फल और सब्जी आदि बटोरकर अपना पेट भरते थे धीरे धीरे उन्होंने पत्थरों से औजार बनाना और आपस में बातचीत करना सीख लिया। हालांकि आगे चलकर आदमी ने भोजन जुटाने के कई और तरीके अपनाए, शिकार और संग्रह करने यानी इधर उधर से खाने की खोज

को चीजे तलाशने और बटोरने का तरीका भी चलता रहा। आज भी दुनिया के कुछ भागो में ऐसे शिकारी संग्रहक समाज (Hunter Gatherers) है जो शिकार और संग्रहण से अपने भोजन की व्यवस्था करते है। इसलिए हम यह सोचने पर मजबूर होते है कि आज के इन शिकारी संग्राहक लोगो की जीवन शैली का अध्ययन करने से हमे अतीत के बारे मे कुछ जानकारी मिल सकती है या नही।

जीवाश्म (Fossil) शब्द एक अत्यंत पुराने पौधे जानवर या मानव के उन अवशेषो या छापो के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो एक पत्थर के रूप में बदलकर अक्सर किसी चट्टान में समा जाते है और फिर लाखो सालो तक उसी रूप में पड़े रहते है। प्रजाति या स्पीशीज (Species) जीवो का एक

Scanned with CamScanner

एक ऐसा समूह होता है जिसके नर और मादा मिलकर बच्चे पैदा कर सकते है और उन के बच्चे भी आगे प्रजनन करने वाली संतान उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं। एक प्रजाति के सदस्यों से संभोग करके बच्चे पैदा नहीं कर सकते।

आज हमें आदि मानव के इतिहास की जानकारी मानव की जीवाश्मों (Fossils) पत्थर के औजारों और गुफाओं की चित्रकारियों की खोजों में मिलती है। इनमें से प्रत्येक खोज का अपना एक इतिहास है। अक्सर ही, जब ऐसी खोजें सर्वप्रथम की गई, अधिकांश विद्वानों ने यह मानने से इन्कार कर दिया कि ये जीवाश्म प्रारंभिक मानव के हैं। उन्हें आदि कालीन मानव द्वारा पत्थर के औजार या रंग-रोगन बनाए जाने की योग्यता के बारे में भी शक था।

एक अरसे बाद ही इन जीवाश्मो, औजारो और चित्रकारियो के सच्चे महत्व को स्वीकार किया गया। मानव का विकास क्रमिक रूप से हुआ। इस बात का साक्ष्य हमे मानव की उन प्रजातियो (Species) के जीवाश्मो से मिलता है जो अब लुप्त हो चुकी है। उनकी कुछ विशेषताओ या शारीरिक लक्षणो के आधार पर मानव को भिन्न-भिन्न प्रजातियो में बाँटा गया है। जीवाश्मो की तिथि का निर्धारण प्रत्यक्ष रासायनिक विश्लेषण द्वारा अथवा उन परतो या तलछटो के काल का परोक्ष रूप से निर्धारण करके किया जाता है जिनमें वे दबे हुए पाए जाते हैं। जब एक बार जीवाश्मो की तिथि यानी काल का पता चल जाता है तब मानव विकास का क्रम निर्धारित करना कठिन नही रहता था।

लगभग 200 वर्ष पहले, सर्वप्रथम जब ऐसी खोजें की गई थी, तो अनेक विद्वान यह मानने को तैयार नहीं थे कि खुदाई मे मिले जीवाश्म और पत्थर के औजार तथा चित्रकारियों जैसी अन्य चीजें वास्तव मे मनुष्य के आदिकालीन रूपों से संबंध रखती थीं विद्वानो की यह हिचकिचाहट आम तौर पर बाईबल के ओल्ड टैस्टामेंट मे अभि व्यक्त इस धारणा पर आधारित थी कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना करते समय अन्य प्राणियों के साथ साथ मनुष्य को भी बनाया।

विद्वानो की ऐसी हिचकिचाहट का एक उदा हरण देखिए : अगस्त 1856 मे जब मजदूर (जर्मनी के डसेलडोर्फ नगर के पास) निअंडर घाटी

(मानचित्र 2 पृष्ठ 18) मे चूने के पत्थरो की खान की खुदाई कर रहे थे तो उन्हे एक खोपड़ी और अस्थिपंजर के कुछ टुकड़े मिले। ये चीजें एक स्थानीय स्कूली-शिक्षक कार्ल फुलरौट (Carl Fuhlrott) को सौंप दी गई जो एक प्राकृतिक इतिहास थे। जाँच के बाद उन्होने पाया कि वह खोपड़ी आधुनिक मानव की नही थी। फिर उन्हो ने प्लास्टर से उस खोपड़ी का ढाँचा बनाया और उसे बॉन विश्वविद्यालय के शरीररचना विज्ञान के एक प्रोफेसर हरमान शाफ्हौसेन (Herman Schaaffhausen) के पास भेज दिया। अगले ही वर्ष उन्होने मिलकर एक शोध-पत्र प्रकाशित किया जिसमें उन्होने यह दावा किया कि यह खोपड़ी एक ऐसे मानव रूप की है जो अब अस्तित्व मे नही है।

Scanned with CamScanner